

---

# Shivanirdishta Shivavandana

शिवनिर्दिष्ट शिववन्दना

## Document Information

---

Text title : Shivanirdishta Shivavandana

File name : shivanirdiShTashivavandanA.itx

Category : shiva, shivarahasya

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 1 | 189-202||

Latest update : March 8, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 8, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

# Shivanirdishta Shivavandana

## शिवनिर्दिष्ट शिववन्दना



ये मुक्तिदायक मडेश पिनाकपाणे शम्भो गिरीश डर शङ्कर चन्द्रमौले ।  
विश्वेश्वरान्धकरिपो पुरसूदनेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १८८ ॥

ये देवदेव जगदीश्वर पञ्चवक्त्र श्रीनीलकण्ठ वरदोत्तम विश्वबाहो ।  
सोमाग्निभानुनयनामल शङ्करेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १८९ ॥

ये शर्व भालनयनाभिलविश्वमूर्ते कल्याणभूधरधनुर्धर शूलपाणे ।  
भर्ग त्रिलोचन भगाक्षिडराजरेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९० ॥

ये विष्णुवल्लभ सदाशिव कालकाल कालाग्रिन्द्र करुणाकर दीनबन्धो ।  
कर्पूरगौर परमेश मडेश्वरेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९१ ॥

ये वामदेव भवभञ्जन भूतिभूष भूतेश षडुपरशो प्रमथाधिनाथ ।  
विश्वाधिक त्रिदशवन्ध सुरेश्वरेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९२ ॥

ये भक्तवत्सल जटापटलाबलम्बिभालेन्दुषडु रुचिमण्डलमण्डिताङ्ग ।  
रत्नरुद्ररुद्रभुजगराजविभूषणोति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९३ ॥

ये भीम षड्भुभगुरो मृगशावडस्त शार्दूलयर्मवसनाव्यय सत्यन्ध ।  
शैलाधिराजनिलय त्रिपुरान्तकेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९४ ॥

ये भीम रुद्र वृषभध्वज वीरभद्रभद्रावतार भगवन् भवभावरुप ।  
निःसङ्ग निर्मल निरञ्जन निर्गुणोति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९५ ॥

ये कालकूटविषभूरिभयार्तदिवसंरक्षकाद्य विषमाक्ष समस्तसाक्षिन् ।  
सूक्ष्मातिसूक्ष्म शिव दक्षमभान्तकेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९६ ॥

ये यज्ञशासन वृषासन धर्मरुप यज्ञादिकर्मकूलदायक यज्ञमूर्ते ।  
सृष्टिस्थितिप्रलयकारण सात्विकेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९७ ॥

ये नीलवोडित दिगम्बर कृत्तिकासः श्रीकण्ठ शान्त निरुपाधिक निर्विकार ।  
मृत्युञ्जयाव्यय निधीश गणेश्वरेति मामर्थयन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ १९८ ॥

ये सोम साम्भ शिपिविष्ट जगन्निवास डैलासवास मुनिवृद्धमलाधिवास ।  
सोभावतंस शितिकण्ठ शिवाप्रियेति मामर्थायन्त्यनुवदन्ति त अवे धन्याः ॥ २०० ॥

(इलम्)

मन्नामामृतपायिनः स्वजननीस्तन्यं पुनः सर्वथा  
नो काङ्क्षन्ति न याप्नुवन्ति सततं मत्पादपदार्थकाः ।  
मल्लिङ्गार्थनतत्पराः मम छिता मल्लोक अवेनिशं  
सन्तिष्ठन्ति निरस्तदुःखनिकरा मद्भक्तवर्था मुदा ॥ २०१ ॥

मल्लिङ्गसम्पूजनसक्तचित्ता मद्भक्तपूजार्थमुपात्तवित्ताः ।  
मन्नामसङ्कीर्तनपूतचित्ताः वसन्ति मन्नामसुधैकचित्ताः ॥ २०२ ॥

सन्तः क्वचित्सन्ति निशान्तभीशं स्वान्तःस्थितं सन्ततमर्थयन्तः ।  
मामेव विश्लेशमनन्तमाधमवेधमेकं निगमान्तवेधम् ॥ २०३ ॥

॥ इति शिवरुद्रस्थान्तर्गते शिवनिर्दिष्ट शिववन्दना सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरुद्रस्थम् । उग्राप्यः सप्तमांशः । अध्यायः १ । १८८-२०२ ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 1 . 189-202..

Notes:

The source text has a numbering error from shloka 194 onwards that has been rectified for this webpage.

Proofread by Ruma Dewan

---

—  
*Shivanirdishtha Shivavandana*  
pdf was typeset on March 8, 2024  
—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

